

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 02 अगस्त, 2022

पगिली वेंकैया

संस्कृतमंत्रालय नई दिल्ली में 02 अगस्त, 2022 को स्वतंत्रता सेनानी पगिली वेंकैया की 146वीं जयंती के अवसर पर तरिगा उत्सव का आयोजन कर रहा है। केंद्रीय गृह मंत्री तरिगा उत्सव में हस्सिसा लेंगे। स्वतंत्रता सेनानी पगिली वेंकैया ने देश के राष्ट्रीय झंडे को तैयार किया था। गांधी जी के अनुरोध पर उन्होंने भारत के राष्ट्रीय झंडे की परकिल्पना की थी। हालाँकि प्रारंभ में वेंकैया ने ध्वज में केवल लाल और हरे रंग का ही प्रयोग किया था जो क्रमशः हट्टि तथा मुसलमान समुदायों का प्रतनिधित्व करते थे। कत्तु बाद में इसके केंद्र में एक चरखा और तीसरे रंग (सफेद) को भी शामिल किया गया। वर्ष 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस द्वारा इस ध्वज को आधिकारिक तौर पर अपनाया गया। 4 जुलाई, 1963 को पगिली वेंकैया की मृत्यु हो गई। तरिगा उत्सव के इस कार्यक्रम के समापन के अवसर पर पगिली वेंकैया के बहुमूल्य योगदान के लिये उनके सम्मान में स्मारक डाक टिकट जारी किया जाएगा। इस अवसर पर उनके परिवार को भी सम्मानित किया जाएगा एवं हर घर तरिगा गीत और वीडियो भी जारी किया जाएगा।

अंडाल थरुिनाक्षत्रम

1 अगस्त, 2022 को अंडाल थरुिनाक्षत्रम और प्रसदिध तमलि संत कवि अंडाल की जयंती है, जिन्हें देवी लक्ष्मी का अवतार माना जाता है। उन्हें दक्षिण की मीरा कहा जाता है। तमलि महीने का पूरम दविस अंडाल की जयंती के रूप में मनाया जाता है। पूरम हट्टि ज्योतिषि में 27 नक्षत्रों में से एक है। अंडाल 12 अलवार संतों में से एक मात्र महिला संत है। जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भगवान वषिणु की भक्तिका के लिये समर्पित कर दिया था। माना जाता है कि उनका जन्म 7 वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान श्रीवलिलिपुथुर में हुआ था। उन्हें भूमिदेवी (धरती माता) का भी अवतार माना जाता है। श्रीवलिलिपुथुर मंदिर अंडाल को समर्पित है।

'मजिर मेला'

प्रधानमंत्री ने 31 जुलाई, 2022 को 'मन की बात' की 91वीं कड़ी में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के तहत एकता की भावना को बढ़ावा देने में पारंपरिक मेलों के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस दौरान प्रधानमंत्री ने चंबा के 'मजिर मेला' का जिकिर किया। हाल ही में इस मेले को केंद्र सरकार द्वारा अंतरराष्ट्रीय दर्जा देने की भी घोषणा की गई है। दरअसल, मक्के के पौधे के पुष्पक्रम को मजिर कहते हैं। जब मक्के पर फूल खलिते हैं, तो मजिर मेला मनाया जाता है और इस मेले में देश भर से पर्यटक हस्सिसा लेने आते हैं। मजिर मेला 935 ई. में तरगिरत (अब कांगड़ा के नाम से जाना जाने वाला) के शासक परचंबा के राजा की वजिय के उपलक्ष्य में, हमिचल प्रदेश के चंबा घाटी में मनाया जाता है। ऐसा कहा जाता है कि अपने वजियी राजा की वापसी पर लोगों ने उसका धान और मक्का की मालाओं से अभिवादन किया, जो कसिमृद्ध और खुशी का प्रतीक है। यह मेला श्रावण मास के दूसरे रविवार को आयोजित किया जाता है। इस मेले की घोषणा के समय मजिर का वतिरण किया जाता है, जो पुरुषों और महिलाओं द्वारा समान रूप से पोशाक के कुछ हस्सिसों पर पहना जाने वाला एक रेशम की लटकन है। यह तसली धान और मक्का के अंकुर का प्रतीक है जो वर्ष के श्रावण मास के आसपास उगते हैं। सप्ताह भर चलने वाला मेला तब शुरू होता है जब ऐतिहासिक चौगान में मजिर ध्वज फहराया जाता है।